International Journal of Information Movement *Vol. 10 Issue III* *July 2025)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 13-19**

बौद्ध संस्कृति एवं कला

डॉ॰ रेखा
इतिहास प्राध्यापिका, शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय,
मटक माजरी इन्द्री, करनाल
Email-id :Shrutrekha@gmail.com

सारांश:

भारतीय संस्कृति के तीन मूल आधार – कला, शिक्षा एवं साहित्य, और दर्शन एवं साधना – में बौद्ध संस्कृति का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। करुणा, अहिंसा और मानवता पर आधारित बौद्ध धर्म ने न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि कला, साहित्य और सामाजिक मूल्यों में भी गहन प्रभाव डाला। बौद्ध कला ने मूर्तिकला, चित्रकला और स्थापत्य के माध्यम से धर्म के गूढ़ संदेशों को जनमानस तक पहुँचाया। सांची और अमरावती के स्तूप, नालंदा और विक्रमशीला महाविहार जैसे स्थापत्य अवशेष भारतीय धरोहर के अमूल्य प्रतीक हैं। बुद्ध प्रतिमाओं की आभा और शांति आज भी दर्शकों को आत्मिक गहराई का अनुभव कराती है। सम्राट अशोक के काल में स्तूप और विहारों का व्यापक निर्माण हुआ, जिसने बौद्ध स्थापत्य को विश्वव्यापी पहचान दिलाई। इस शोध में बौद्ध संस्कृति एवं कला की विकास यात्रा, मूर्तिकला और स्थापत्य की विशेषताओं तथा इसके वैश्विक प्रसार के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: बौद्ध संस्कृति, बौद्ध कला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, स्तूप, विहार, अशोक काल, भारतीय संस्कृति, करुणा और अहिंसा, वैश्विक प्रसार

1.0 प्रस्तावना:

किसी भी देश की संस्कृति के तीन मूल आधार होते हैं - पहला कला एवं स्थापत्य, दूसरा शिक्षा एवं साहित्य तथा तीसरा दर्शन एवं साधना। भारतीय संस्कृति की 'बहुजन हिताय एवं बहुजन सुखाय' के सिद्धान्त के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में ख्याति रही है। इन सिद्धान्तों को विकसित होने में बौद्ध संस्कृति एवं कला का विशेष महत्त्व रहा है। कला एवं धर्म आध्यात्मिक क्रांति के द्योतक रहे हैं।[i] रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपनी पुस्तक 'पाथेर पांचाली' में कहा है कि "भारत में बौद्ध धर्म के उदय ने इस देश में शिल्प, विज्ञान, वाणिज्य एवं साम्राज्य का जितना विस्तार किया, उतना

किसी अन्य तत्त्व ने नहीं।[ii]

बौद्ध धर्म भारत की एक प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा है जो करुणा, अहिंसा और मानवता पर आधारित है और ये सभी सिद्धान्त वर्तमान में भी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार है। बौद्ध धर्म का प्रसार ना केवल धार्मिक दृष्टि से हुआ बल्कि कला, साहित्य एवं सामाजिक मूल्यों में भी इसका महत्त्व रहा। बौद्ध कला ने मानव जीवन के आध्यात्मिक एवं नैतिक पहलुओं को सुंदर रूप में व्यक्त किया है। इस लघु शोध प्रबंध में हम बौद्ध संस्कृति एवं कला की विकास यात्रा एवं प्रचार-प्रसार के वैश्विक प्रभाव का विश्लेषण करेंगे। बौद्ध मूर्तिकला की अगर बात की जाए तो संसार की सबसे सुन्दर प्रतिमाओं में से तीन तो भारतवर्ष में ही मौजूद है। एक बौद्ध प्रतिमा सारनाथ के संग्रहालय में, दूसरी मथुरा संग्रहालय में और तीसरी प्रतिमा राष्ट्रपति भवन को सुशोभित कर रही है। ये तीनों प्रतिमाएं भगवान बुद्ध की है। उसी प्रकार अगर स्थापत्य कला की बात की जाए तो सांची एवं अमरावती के स्तूप, नालंदा एवं विक्रमशीला महाविहारों के वर्तमान अवशेष हमारे देश की अमूल्य निधि है।[iii]

बौद्ध धर्म में कला को केवल सौन्दर्य एवं सजावट का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि यह धर्म एवं दर्शन के प्रसार का साधन था। बौद्ध कला के माध्यम से बुद्ध के उपदेश, जीवन की घटनाएँ और नैतिक शिक्षाएं जनता तक पहुँचाई गई। कला के विभिन्न रूपों-मूर्तिकला, चित्रकला; स्थापत्य कला, सभी में धर्म का गूढ़ संदेश छिपा होता था। बौद्ध विहारों, गुफाओं और स्तूपों की दीवारों पर उकेरी गई कथाएँ लोगों के लिए प्रेरणा और ध्यान का साधन बनती थी। बौद्ध कला में शान्ति, सन्तुलन और आत्मिक गहराई का सौन्दर्य है जो आज भी दर्शकों को आकर्षित करता है। बौद्ध कला के प्राचीन विषय विहार एवं स्तूप थे। विनयपिटिक में भिक्षुओं के रहने के पाँच स्थानों जैसे विहार, अर्द्धयोग, प्रासाद एवं गुहा का उल्लेख हुआ हे।[iv] ये सभी स्थापत्य के नमूने भिक्षुओं के निवास स्थान, साधना एवं शिक्षा के केन्द्र थे। चैत्य पूजा स्थल तथा प्रार्थना के लिए समर्पित थे।

स्तूप बौद्ध स्थापत्य का एक प्रमुख हिस्सा माने जाते हैं जो बुद्ध की अस्थियों अथवा उनके प्रतीकों को संरक्षित करने हेतू बनाएं गए थे। बौद्ध परम्परा के अनुसार महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनके अस्थि-अवशेषों को आठ भागों में विभाजित किया गया था।[v] आरम्भिक स्तूप लकड़ी एवं ईंटों के बने होते थे। जो कालान्तर में पत्थर में परिवर्तित हुए थे। स्तूप में तीन मुख्य भाग होते हैं - आधार (अंग) हरमिका (छोटा चोकोर भाग) और छत्र (छतरी)। स्तूप के अंडाकार भाग में अस्थि-अवशेषों को रखा जाता था।[vi] साँची का महान स्तूप इसका उत्तम उदाहरण है जिसमें सुंदर तोरण,

द्वार, रेलिंग और धर्मचक्र के चित्र बने हुए हैं। ये स्तूप ना केवल स्मारक होते थे अपितु ध्यान और परिक्रमा के लिए भी पवित्र स्थल होते थे। इस परम्परा का विस्तार श्रीलंका, तिब्बत, बर्मा और अन्य देशों में भी हुआ। हमारे देश के पत्थर से बने स्तूप नासिक, अमरावती, कार्ले, सारनाथ अत्यन्त प्रसिद्ध है। इन संरचनाओं में प्रतीकवाद, समरूपता और आध्यात्मिक वातावरण की रचना की जाती थी।

बौद्ध कला के कुछ उदाहरणों पर सम्राट अशोक के काल से प्राचीन होने पर विवाद है।[vii] लेकिन यह भी निश्चित है कि मौर्य काल से पहले किसी भी प्रकार की प्रस्तर कला का कोई निश्चित अवशेष प्राप्त नहीं होता।[viii] इन तथ्यों के आधार पर यह कहा गया है कि अशोक कालीन प्रस्तर कला को पश्चिमी कला का अनुकरण माना जाना चाहिए।[ix] लेकिन निर्विवाद रूप से तुलनात्मक अध्ययन होने पर अशोक कालीन कला को बौद्ध धर्म के विकास से ही फलीभूत हुआ माना जाता है।[x]

बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूप एवं बहुसंख्यक विहारों का निर्माण करवाया था। चीनी यात्रियों ने भारत में अनेक स्थलों पर स्तूप एवं विहार देखे जो उन्होंने सम्राट अशोक द्वारा निर्मित बताए है।[xi]

1882 में जब जनरल कनिंघम पुरातत्त्व विभाग के निदेशक थे तब उन्होंने बौद्ध गया में खुदाई का काम आरम्भ किया था।[xii] इन खुदाइयों में प्राप्त वस्तुओं में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण मूर्तियां प्राप्त हुई थी।[xiii] उनमें से आज भी कलकत्ता, पटना एवं मथुरा के संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं। बौद्ध मूर्तिकला की शुरूआत प्रतीकवाद से शुरू हुई थी जैसे - बुद्ध का सिंहासन, वटवृक्ष, धर्मचक्र, पद्चिन्ह आदि। प्रथम सदी के बाद बुद्ध की मानवाकार मूर्तियां बनाई जाने लगी जो भावमुद्राओं से युक्त होती थी।

प्रमुख मुद्राएं - ध्यान मुद्रा, धर्मचक्र प्रवर्तक मुद्रा, अभय मुद्रा, भिक्षाटन मुद्रा तथा भूमि-स्पर्श मुद्रा। इन मूर्तियों में महात्मा बुद्ध के चेहरे पर असीम शांति एवं करुणा की झलक होती थी। मूर्तियों की संरचना में संतुलन, समरुपता और प्रतीकात्मकता का सुंदर मेल होता था।[xiv] ये मूर्तियां गांधार, मथुरा, अमरावती शैली में बनाई गई थी। गांधार शैली का विस्तार उत्तर-पश्चिम भारत (आज का पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान) में हुआ था, जिस पर यूनानी एवं रोमन प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। बुद्ध की मूर्तियां यथार्थवादी, ग्रीक परिधान और घुंघराले बालों के साथ बनाई जाती थी।मथुरा शैली - यह शैली मध्य भारत में विकसित हुई तथा रस शैली में बनी बुद्ध मूर्तियां आत्मिक भावों से

ओतप्रोत भारी शरीर और सरल भारतीय परिधान में बनाई जाती थी। ये मूर्तिकला की दोनों शैलियां एक-दूसरे से भिन्न होते हुए भी बौद्ध मूर्तिकला की विविधता को समृद्ध करती है और भारत की कला के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान देती है।[xv] खुदाई में मिली मूर्तियों में तीन मूर्तियां अमूल्य एवं कला के मर्म को छूने वाली मानी जाती है जिनमें से एक में यशोधरा अपने शिशु राहुल को गोद में लिए सोई हुई हैं तथा बगल में एक दीपक जल रहा है। यानि महात्मा बुद्ध दबे पांव घर से निकल कर ज्ञान की खोज में जा रहे है तथा जाते हुए अपनी पत्नी और पुत्र को निहार रहे हैं। बौद्ध साहित्य में इस घटना को 'महाभिनिष्क्रमण' कहा गया है। यशोधरा के मुख पर सरलता एवं सौम्यता नजर आ रही है। दूसरी मूर्ति 'महापरिनिर्वाण' (बुद्ध की मृत्यु) की है तथा तीसरी मूर्ति एक बोधिसत्व (अवलोक्तिेश्वर) की है। ये सभी मूर्तियाँ कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने माने जाते हैं।

अगर बौद्ध चित्रकला की बात की जाए तो यह हमें गुफाओं की दीवारों, स्तूपों एवं हस्तलिखित ग्रंथों पर पाई गई है।अजंता की गुफाओं में जातक कथाओं को रंगों एवं आकृतियों के माध्यम से अत्यन्त कुशलता के साथ चित्रित हुई मिलती है। इन चित्रों में चेहरे के भाव, नारी-सौन्दर्य, प्रकृति एवं नैतिक शिक्षा का अद्भुतसमन्वय दिखाई देता है। रंग, छाया, प्रकाश एवं गति मन की शान्ति की अनुभूति कराते हैं। चित्रकला ने बौद्ध धर्म को आमजन तक पहुंचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। [xvi]

सांची के स्तूप की दीवारों पर भी जातक कथाओं तथा बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं का चित्रण खूबसूरती से किया गया है। यहां पर अनाथपिडंक नामक व्यापारी द्वारा जेतवन विहार को खरीदने के लिए दी गई स्वर्ण मुद्राओं को दिए जाने का सुन्दर चित्र बना है।[xvii] बुद्ध की माता का स्वर्ग जाने वाला चित्र भी बहुत सुंदर है। इसके अलावा महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के समय उनके अस्थि अवशेषों को प्राप्त करने के लिए तत्कालीन राजाओं द्वारा किए जाने वाले युद्ध का भी सुन्दर चित्रांकन हुआ है।[xviii]

बिहार में बारबर की पहाड़ियों में भिक्षुओं के रहने के लिए जिन गुहाओं का निर्माण कराया गया था उनकी दीवारों पर सुन्दर पॉलिश की गई है। और ये आज भी शीरो की तरह चमकदार है। सम्राट अशोक के स्तम्भों पर भी यही चिकनाई और चमक मिलती है। मौर्य कालीन कला का ये एक सुन्दर उदाहरण है। अशोक के स्तम्भों में पशुओं की आकृतियांे के तक्षण निर्दोष और रमणीय है। शायद ही किसी युग में इस प्रकार के सुन्दर उदाहरण कहीं पर मिले।

मौर्य युग की स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, लेखनकला इत्यादि सम्पूर्ण कलात्मक अभिव्यक्ति के केन्द्र में बौद्ध धर्म है और इसमें से अधिकांश की सर्जना धनवान वणिकों और शिल्प-श्रेणियों के संरक्षण में तथा राजाओं के दान से संभव हुई थी।[xix] धार्मिक स्थापत्य-कला के अवशेष बौद्ध स्तूप तथा बौद्ध गुफा मन्दिर है।[xx] सांची मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भोपाल से 30 कि॰ मी॰ पूर्व में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल है।इस स्थल को 1989 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्रदान किया था। यहाँ से प्राप्त स्तूप, चैत्य, स्तम्भ, तोरण, आदि भारतीय शिल्पकला के सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। वर्तमान समय में यहां पर 48 बुद्ध विहारों के ध्वसांवशेष मौजूद है। आरम्भिक दौर में इस स्थल का नाम 'शान्ति' था, लेकिन बाद में बिगड़ कर 'साँची' हो गया था।[xxi]

2.0 निष्कर्षतः

रूप में कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म की छठी सदी ई॰ पू॰ का एक प्रसिद्ध धर्म था। आरम्भिक दौर में उपासना के लिए बौद्ध प्रतीक चिन्हों का प्रयोग किया जाता था। लेकिन पहली सदी ई॰ में बौद्ध प्रतिमाओं को मूर्त रूप प्रदान किया गया। सम्राट अशोक एवं सम्राट कनिष्क के प्रयासों से यह धर्म भारत की सीमाओं से बाहर निकल कर अनेक एशियाई देशों जैसे श्रीलंका, चीन, जापान, थाईलैंड, कम्बोडिया, नेपाल, भूटान इत्यादि देशों में फैल गया था।आज भी हम मौर्य, शुंग, कुषाणकालीन स्तूप, विहार, चैत्य, इत्यादि को देख सकते हैं। प्रथम सदी के बाद तो असंख्य बौद्ध मूर्तियाँ बनाई गई। बौद्ध कला ने जीवन के हर एक मर्म को छुआ था। आज भी संसार में सर्वाधिक बौद्ध मूर्तियां संसार के विभिन्न भागों में मौजूद है। बौद्ध संस्कृति एवं कला का प्रसार अनेक एशियाई देशों में हुआ क्योंकि इस धर्म को आरम्भ से ही राज-संरक्षण प्राप्त था। अनेक देशों के बौद्ध पुरावशेषों को यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करते हुए विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया हुआ है।

2.0 संदर्भ सूची:

[i] डा॰ गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, 1990, पृ॰ 205

[ii] मुंशी एन॰ एल॰, बौद्धकालीन भारत का इतिहास, समता प्रकाशन, डॉ॰ अम्बेडकर कॉलोनी, लस्करी बाग, नागपुर, 2002, पृ॰ 132

[iii] प्रो॰ अंगन लाल, बौद्ध संस्कृति, प्रबुद्धप्रकाशन, आर 25, सिद्धार्थ लेन, संजयपुरम लखनऊ, 1998, पृ॰ 2

[iv] विनय पिटिक, चुल्लवग्ग, पृ॰ 239

[v] महापरिनिर्वाण सुत्त के अनुसार –कुशीनगर के मल्ल, मगध अजातशत्रु, वैशालीके लिच्छवी, कपिलवस्तु के शाक्य, अल्लकप्प के बुलि, राम गाम के कोलिय, तथा पावा के मल्लों में 'बुद्ध के शारीरिक अवशेषों' का विभाजन हुआ था

[vi] हिस्ट्री ऑफ इंडियन आर्ट एंड आर्किटेक्च, पृ॰ 65–66

[vii] पिपरवा स्तूप को शाक्यनिर्मित कहा गया है किन्तु उस लब्ध पात्र के अभिलेख को पढ़ना संभव नहीं

[viii] कौशाम्बी के उत्खनन में श्री आर॰ शर्मा द्वारा प्रापत नवीन सामग्री से इस पुरानी धारणा को आघात पहुँचा।

[ix] उदा॰ फोडरिंगटन एशेन्ट इंडिया (1926) स्मिथ ए॰ हिन्दी ऑफ फाइन आर्ट इन इंडिया एण्ड सीलोन, पृ॰ 20, 59–62, एस॰ पी॰ गुप्त, रूट्स ऑफ इंडियन आर्ट

[x] बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ॰ 92

[xi] वही, पृ॰ 208

[xii] बौद्ध कालीन भारत का इतिहास, पृ॰ 92

[xiii] भारत में बौद्धधर्म की यात्रा, एकनाथ सहारे, पृ॰ 64

[xiv] बौद्ध कालीन भारत का इतिहास, पृ॰ 93

[xv] वही, पृ॰ 92

[xvi] बौद्ध कालीन भारत का इतिहास, पृ॰ 93

[xvii] वासुदेव शरण अग्रवाल, चक्रध्वज, दि व्हील–लैग ऑफ इंडिया (1965)

[xviii] रोमिला थापर, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

[xix] वही, पृ॰ 112

[xx] बौद्धकालीन भारत का इतिहास, पृ॰ 107

[xxi] बौद्धकालीन भारत का इतिहास, पृ० 108